द्वितीय अध्याय

"कमलेश्वर के उपन्यासों का संक्षिप्त परिचय"

द्वितीय अध्याय

कमलेश्वर के उपन्यासों का संक्षिप्त परिचय

2·1 प्रास्ताविक

2·2 एक सड़क सतावन गलियाँ

2·3 डाक बंगला

2·4 लौटे हुए मुसाफिर

2·5 तीसरा आदमी

2·6 समुद्र में खोया हुआ आदमी

2·7 काली आँधी

2·8 आगामी अतीत

2·9 निष्कर्ष

द्वितीय अध्याय

कमलेश्वर के उपन्यासों का संक्षिप्त परिचय

2·1 प्रास्ताविक :-

एक उपन्यासकार के रूप में कमलेश्वरजी का विशेष महत्त्व रहा है। कमलेश्वरजी ने अपने उपन्यासों और कहानियों के द्वारा अपने समय के यथार्थ को उद्घाटित करनेवाले एक श्रेष्ठ साहित्यकार माने जाते हैं। जीवन के प्रति उनका विशाल और प्रगतिशील दृष्टिकोन है। उनके सभी उपन्यासों में यथार्थवाद दिखाई देता है। कमलेश्वर ने हमेशा तत्कालीन समस्याओं को अपने साहित्य में महत्त्वपूर्ण स्थान दिया है। अपने उपन्यासों में उन्होंने जीवन के यथार्थ को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है। कमलेश्वर के कई उपन्यासों पर फिल्में भी बन चुकी है। कमलेश्वर के प्रमुख उपन्यास निम्नलिखित हैं।

1· एक सड़क सत्तावन गलियाँ - 1961

2· डाक बंगला - 1962

3· लौटे हुए मुसाफिर - 1963

4· तीसरा आदमी - 1964

5· समुद्र में खोया हुआ आदमी - 1965

6· काली आँधी

7· आगामी अतीत - 1976

2·2 एक सड़क सत्तावन गलियाँ :-

"एक सड़क सत्तावन गलियाँ" कमलेश्वरजी का पहला सामाजिक समस्या-प्रधान उपन्यास है। उन्होंने अपने इस पहले उपन्यास में अपनी जन्मभूमि मैनपुरी की जिन्दगी को यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया है। मैनपुरी के निवासियों की सामाजिक समस्याओं का बेखुबी अंकन किंया है। शिवराज, रंगीले, बंसिरी और सरनाम की अपनी-अपनी समस्याएँ हैं। बंसिरी एक अच्छी औरत बनकर जीना चाहती थी। पर सरनामसिहं ने उसे रखैल बना दिया था। इसलिए उसके दिल में सरनामसिंह के प्रति नफ़रत पायी जाती है। बंसिरी सरनाम को खूब गालियाँ देती है। शिवराज, रंगीले, बंसिरी और कमला की जिन्दगी का यथार्थ चित्र एक सड़क सत्तावन गलियाँ में प्रस्तुत हुआ है। कमलेश्वरजी इस उपन्यास के बारे में कहते हैं कि मेरे लिए यह उपन्यास उतना ही प्रिय है जितनी प्रिय मेरे लिए मेरी माँ और जन्मभूमि मैनपुरी रहा था। इस उपन्यास का नायक है सरनामसिंह। इसमें शिवराज, रंगीले, बंसी, हेम और कमला ये गौण पात्र हैं। बंसी और सरनाम का चरित्र विशेष प्रभावशाली बन गया है। यह उपन्यास आज़ादी के पूर्व लिखा गया है। और इसको आज़ादी के बाद पूर्णत्त्व प्राप्त हुआ। इस उपन्यास में आर्थिक, सामाजिक, वैयक्तिक और मध्यवर्गीय जीवन के जीते-जाते सजग चित्र पाये जाते हैं। प्रकाशक की गलती से यही उपन्यास "बदनाम बस्ती" के नाम से प्रकाशित हुआ था।

इस उपन्यास की बहुत बडी खासियत यह है कि यह उपन्यास आकार से छोटा होने पर भी विस्तार से काफी बड़ा लगता है। "कमलेश्वरजी ने अपने इस उपन्यास में स्वातंत्र्योत्तर एवं पूर्व काल के युग को अत्यन्त सूक्ष्मता के साथ चित्रित किया है। साम्प्रदायिक तनाव, किराये के नेता, हरिजन आंदोलन, कम्युनिस्ट काँग्रेस विवाद, अखबारनवीस और उनके बीच शिवराज, हेम, बाजामास्टर, हफीज साहब, कमला जैसे व्यक्तित्त्वों के टूटने की आवाज तक नहीं आती।"[1] लेकिन कुलमिलाकर टूटे हुए बिखराव से एक सम्पूर्ण चित्र उभरकर पाठकों के सामने आता है जो "एक सड़क सत्तावन गलियाँ" का प्रभावपूर्ण अंकन है।

2·3 डाक बंगला :-

"डाक बंगला" यह कमलेश्वरजी का दूसरा एवं श्रेष्ठ उपन्यास है। इस उपन्यास का प्रकाशन 1962 में हुआ। कमलेश्वरजी का यह श्रेष्ठ नायिका प्रधान उपन्यास है। इस लघु-उपन्यास की कहानी "इरा" नामक युवती के साथ जुड़ी हुई है। इरा बड़ी अभावग्रस्त है। इसे कभी भी सच्चा प्यार नहीं मिला। इरा ने चार व्यक्तियों के साथ प्रेम किया। और इसी प्यार की तलाश में वह अपने आप को खो बैठी थी। इस उपन्यास की पूरी कथा इरा के इर्दगिर्द ही घूमती है। इरा को सच्चा प्यार न मिलने के कारण वह अपने आप में ही खो बैठी थी। इरा की जिन्दगी में जो भी व्यक्ति आया उसने उसके साथ सिर्फ खिलवाड ही किया। कश्मीर सफर के दौरान इरा कश्मीर के एक होटल में ठहरी थी। उसी समय यकायक इरा की पहचान तिलक के साथ हो गयी। इसी समय इन दोनों में निकटता बढती गयी। अतः इरा ने एक दिन तिलक को अपना पुराना किस्सा बताया और इसी किस्से को लेखक ने यहाँ प्रस्तुत किया है।

इरा के पति डॉक्टरी का काम करते थे। उन्हें किसी भी समय रात को बाहर जाना पड़ता था। वे दोनों आसाम की एक बस्ती में रहा करते थे। वह बस्ती बहुत ही धोखेबाज थी। इसी बस्ती में रहते समय किसी विद्रोही ने इरा के पति को सरकारी अफसर समझ कर गोली मार दी। अतः इरा बेवा बन गयी। पति की मृत्यु के बाद उसे चैन नहीं मिला। लेकिन उसकी विशेषता यह रही कि वह हर बार नये ढंग से जीवन के क्षेत्र में हमेशा मुस्कराती हुई प्रविष्ट हो चुकी है। अतः कमलेश्वरजी ने इरा को विशेष दार्शनिकता के साथ प्रस्तुत किया है। इरा का प्रत्येक वाक्य इस उपन्यास में महत्त्वपूर्ण बन पड़ा है। कमलेश्वरजी का यह उपन्यास प्रेम समस्या को लेकर लिखा गया है। इरा ने अपने जीवन में चार पुरूषों से प्रेम किया सोलंकी, बतरा, विमल और डॉक्टर चंद्रमोहन। इनमें से एक ने भी उसे अंत तक सच्चा प्यार नहीं दिया। और उसके लिए वह जिन्दगी भर तड़पती रही।

कमलेश्वर ने यह उपन्यास एक दूसरे प्रकार की भाषा शैली में अपने आप को अजमाने के लिए लिखा है। और बाद में स्वयं को ही लगा कि वे इस भाषा शैली के लिए नहीं बने हैं। कमलेश्वरजी ने इरा को विशेष दार्शनिकता के साथ प्रस्तुत किया है। इरा का चरित्र-चित्रण प्रभावशाली बन गया है। कमलेश्वरजी ने यहाँ जीवन की यथार्थता को प्रस्तुत किया है। इस उपन्यास में दूसरी समस्याओं का आधार लेकर आर्थिक समस्या किस तरह निर्माण होती है इसका यथार्थ चित्रण किया है। इसके साथ-ही-साथ इस आधार पर ही कमलेश्वरजी ने नारी जीवन की असहाय और दयनीय परिस्थितियों को चित्रित किया है।

2.4 लौटे हुए मुसाफिर :-

भारत-पाक विभाजन की समस्या को लेकर लिखा गया कमलेश्वरजी का यह श्रेष्ठ उपन्यास है। इसमें एक छोटीसी बस्ती की कहानी का वर्णन है। इस बस्ती में धीरे-धीरे किस तरह परिवर्तन होता है इसका चित्रण इस उपन्यास में किया है। इस बस्ती में "चिकवों की बस्ती" नामक एक और छोटी बस्ती है। और यही "चिकवों की बस्ती" इस उपन्यास की कहानी का मूलाधार है। इस बस्ती में आज़ादी के पहले, आज़ादी के बाद और आज़ादी के समय किस प्रकार परिवर्तन हो गया इसका हुबहू चित्रण इस उपन्यास में देखने को मिलता है।

इस उपन्यास का प्रकाशन 1963 में हुआ। हिन्दुस्थान की आज़ादी और उसके बँटवारे के प्रभाव से प्रभावित होकर कमलेश्वरजी ने यह उपन्यास लिखा है। और इस उपन्यास के सहारे ही कमलेश्वर ने हमें आत्मविश्वास, देशाभिमान, आस्था, कर्तव्य-परायण आदि महान उपदेश दिये हैं। वह आज की दृष्टि से बहुत-ही महत्त्वपूर्ण हैं। भटके हुए मुसाफिरों में कोई लौटकर आ गये हैं, यह बात असंभव है।

"लौटे हुए मुसाफिर" का कथानक कस्बे के पुराने स्मृतिचित्रों से प्रारंभ होता है। चिकवों की बस्ती में रहनेवाला जुम्मन साई की यह कोठरी इस कथानक

का केन्द्र है, और यहाँ से कहानी का विस्तार होता है। इस कोठरी में बैठकर इफ्तिकार कहता है, "जिन्ना साहब किधर से मुसलमान हैं। सुना है नमाज भी नहीं पढ़ते।[2] उसी समय साई ने उसे रोका "तेरा तू देख।" उसके बाद साम्प्रदायिकता की आग सुलगने लगी थी। और इसका भूचाल-सा धीरे-धीरे चिकवों की बस्ती में आ गया। पूरी बस्ती उजड़ जाने के बाद साई की कोठरी की तरह नसीबन की झोपडी भी यहीं है।

सर्कस के घोडों का जीन कसनेवाले सत्तार को साई ही यहाँ लाया था। सत्तार ताश के कमाल दिखाता था। परंतु इस बस्ती में आकर व सलमा नाम की लड़की से प्यार करता है। वह लड़की विवाहित होते हुए भी परित्यक्ता थी। वह अस्पताल में काम करती थी। साई को यह पसंद नहीं था। वह उसे कोठरी से निकाल देने की धमकी देता है। नसीबन ने साई को समझाने की कोशिश की लेकिन साई ने उसे झिडक दिया।

इन दोनों का प्रेम-प्रसंग बस्ती में चर्चा का विषय बन गया। उसी समय सलमा का पति मकसूद बस्ती मे वापस आ गया। सलमा ने सत्तार से मिलना बंद कर दिया। और उसे अस्पताल की नौकरी से भी निकाला गया। लोग समझते हैं कि यह साई की करामत है। सलमा को लेकर सत्तार कहीं भाग जाना चाहता है लेकिन सलमा तैयार नहीं होती।

कस्बे में जो शान्ति है वह देखकर राजनीतिक कार्यकर्ता बसीर दुखी है। वह बैठक बुलाता है। सत्तार भी इस बैठक में शामिल होता है। वह अंग्रेज अफसर को मारने के लिए गुप्ती पास छिपाये रहता है। कांग्रेस हिन्दुओं की जमात है यह लोगों को समझाने के लिए यह बैठक बुलाई गयी थी। "आज़ादी के बाद हिन्दू राज कायम होगा। इसलिए मुसलमानों को देश के बँटवारे और पाकिस्तान की माँग का जमकर समर्थन ही नहीं करना चाहिए वरन् मरने-मारने के लिए भी तैयार रहना चाहिए।"[3]

आज़ादी की लड़ाई और उसके बाद विभाजन के असर का चित्रण इस उपन्यास में किया गया है। जिस समय हिन्दुस्तान का विभाजन हुआ तब लोगों में घमंड पैदा हो चुका था। इसका वर्णन और हिंदुस्तानी लोगों के बर्ताव का वर्णन इसमें किया गया है। इस उपन्यास के दो पात्र रतन और मकसूद हमेशा गद्दारी करते हैं। तो इसके विपरीत सलमा, सत्तार, बच्चन और नसिबन इन्होंने अपनी-अपनी अच्छी जगह खोज निकाली। पर उनमें से कई लोग इधर-उधर भटकने लगे। इस उपन्यास का अंत लेखक ने आदर्शवादी ढंग से किया है। जो लोग केवल अपना पेट भरने के लिए संघर्ष कर रहे थे वे साम्प्रदायिकता की लहर में किस तरह बह गए इसका यथार्थ चित्रण कमलेश्वरजी ने इस उपन्यास में किया है। लेकिन वे न तो पाकिस्तान जा सके और न अपने कस्बे में वापस आ सके और अंत में जो लोग वापस आये, वे सिर्फ मजदूर बनकर ही आये।

"एक छोटे से कस्बे में साम्प्रदायिकता की लहर के कारण मुसलमानों को किस प्रकार अपनी बस्ती छोड़कर भटकना पड़ता है, इसका यथार्थ वर्णन इसमें दिखाई देता है। कई वर्षों के अंतराल के बाद पहुँचकर उन लोगों के बच्चे जवान होकर फिर अपने कस्बे में पहुँचकर खण्डहारों को पहचानने का प्रयास करते हैं, यह विषय कमलेश्वर ने चुना है। भारत की स्वाधीनता से उन्हें क्या मिला ? यह प्रश्न है, जिसे कमलेश्वर ने उठाया है।"[4]

2·5 तीसरा आदमी :-

"तीसरा आदमी" कमलेश्वरजी का बडा ही चर्चित उपन्यास है। जब पति-पत्नी के बीच कोई तीसरा आदमी आता है, तब रिश्तों में फासलें किस तरह बढ़ते जाते हैं, उसका चित्रण इस उपन्यास में हुआ है। "तीसरा आदमी" की नायिका है चित्रा। उसका पति है "मै"। सुमन्त मैं का दूरदराज का कोई रिश्तेदार है। सुमन्त खुबसूरत नौजवान है। लड़कियों की निगाहे बार-बार उसकी ओर लग जाती थी। चित्रा भी उसकी खुबसूरती से प्रभावित हो गयी। चित्रा और मैं दोनों

दिल्ली में सुमन्त के पास ठहरते हैं। इस बीच चित्रा सुमन्त की ओर खिंचती चली जाती है। तन-मन से दोनों करीब आते हैं। 'मैं' के मन में धीरे-धीरे शक बढ़ने लगता है। आगे चलकर चित्रा सुमन्त से गर्भवती भी रही। उसी समय "मै" जानता था कि सुमन्त का ही खून चित्रा के बदन में बह रहा है। मगर इस मामले में उसने किसीसे कुछ नहीं कहा। "मै" की बेचैनी और अधिक बढ़ती ही जाती है। वह एक अजीब सी कश्मकश के बीच फँस जाता है। पर वह बड़ा मजबूर था।

एक दिन चित्रा को बिना कहे बगैर "मै" कुछ दिनों के लिए भोपाल चला गया, ताकि दिल का बोझ कम हो जाय। माँ-बाप के पूछने पर "मैं" ने बताया कि चित्रा को प्रसव के लिए मायके भेज दिया है। कुछ दिनों बाद चित्रा के पिता ने "मै" के नाम पर चिठ्ठी भेज दी थी कि पुत्र हुआ है। "मै" और कुछ दिन अपनी छुट्टी बढ़ाना चाहता है लेकिन आकाशवाणी की ओर से "मै" को जल्द ही बुलाया गया। एक दिन चित्रा को "मै" ने समझाया और वे दोनों एक नई जिन्दगी शुरू करने लगे। प्रसव के बाद चित्रा बहुत ही खुबसूरत दिखाई देने लगी थी। गुड्डू को डिफ्थेरिया की बीमारी लगने के कारण सुमन्त ने ही हॉस्पीटल में रखा क्योंकि दिल्ली में "मै" की किसीसे पहचान नहीं थी। हॉस्पीटल में भी चित्रा सुमन्त से ही ज्यादा बाते करती थी। इसके कारण फिर "मै" के दिल में शक और भी पक्का हो गया।

हॉस्पीटल के लौटने के बाद चित्रा और "मै" खुशी के साथ रहने लगे। चित्रा और "मैं" दोनों एक दूसरे के करीब आ गये। चित्रा फिर से गर्भवती रही। "मै"का बचा हुआ सामान लेकर जब सुमन्त "मै" के घर आया तो उसने गुड्डू को उठा लिया और प्यार से उसको चूम लिया। इससे "मै" का शक फिर से बढ़ गया। ऐसे में "मैं" ने सुमन्त को उल्टी-सीधी बाते कहीं। सुमन्त ने ही एक कमरा लिया था। इधर चित्रा को लड़की हुई। प्रसव का सारा इंतजाम सुमन्त ने ही किया था। कुछ दिन बीत गये। चित्रा ने दिल्ली में एक स्कूल में नौकरी स्वीकार कर ली। "मै" ने पटना ट्रान्सफर कर लिया लेकिन चित्रा दिल्ली छोड़ने के लिए तैयार नहीं

है। क्योंकि जब-जब "मैं" चित्रा की आँखों में देखता है तो लगता है जैसे दो नहीं चार आँखे उसको ताक रही है, दो नहीं चार ओंठ उसको चूम रहें हैं। आखिर "मै" ने दिल्ली छोड़ ही दी। वहाँ भी वह चैन की साँस नहीं ले पाया। लेकिन इधर कुछ दिनों बाद पता चला कि सुमन्त ने किसी होटल के कमरे में आत्महत्या कर ली थी। शायद किसी तीसरे आदमी के कारण - शायद वह "मै"।

स्त्री-पुरूष या पति-पत्नी के सम्बन्ध इतने कोमल आधार पर स्थीर होते हैं कि वे अपने बीच किसी प्रकार का अन्तर सह नहीं पाते। कभी भूल से भी यदि इन दोनों के बीच किसी तीसरे ने प्रवेश किया है तो उनका जीवन तत्ख हो गया है। व्यक्ति जीवन की इसी उलझन को कमलेश्वर ने प्रस्तुत किया है।

"तीसरा आदमी" यह उपन्यास बड़े ही कलात्मक ढंग से लिखा गया है। इसमे वर्तमान, आर्थिक, सामाजिक परिस्थितियों के आधार पर किस तरह परिवर्तन होता है इसका यथार्थ वर्णन कमलेश्वरजी ने इस उपन्यास में किया है। पति-पत्नी की जिन्दगी किस तरह टूट जाती है इसका यथार्थ चित्रण इस उपन्यास में कमलेश्वर ने किया है।

2·6 <u>समुद्र में खोया हुआ आदमी</u> :-

कमलेश्वरजी का यह पाँचवा लघु-उपन्यास है। जिसका प्रकाशन 1969 में हुआ है। यह एक निम्न-मध्यवर्ग पर लिखा गया उपन्यास है। कमलेश्वर का यह एक बेहद सफल उपन्यास है। इस उपन्यास के प्रमुख पात्र श्यामलाल, बीरन, रम्मी, तारा, हरबंश, समीरा, नमता आदि हैं। इनकी आर्थिक स्थिति बहुत ही जर्जर हो गयी है। आर्थिक स्थिति में सुधार आ जाए इसलिए श्यामलाल दिल्ली पहुँचते हैं। एक ट्रान्सपोर्ट कंपनी में क्लर्क के रूप में काम करते हैं, ताकि आगे चलकर उस कंपनी के मैनेजर बन जायेंगे। पर यह नहीं होता कंपनी की नौकरी खो बैठते हैं। इस दुर्घटना के बाद ही उपन्यास की शुरूआत होती है।

इस दुर्घटना के बाद श्यामलाल अनेक धंधे खोजते है, मगर उन्हें कहीं भी काम नही मिलता। श्यामलाल अपने परिवार की देखभाल करने में असमर्थ है, यह मानने के लिए वे तैयार नहीं है। अपनी बेटियाँ नोकरियाँ करें यह भी अच्छा नहीं लगता। वह अपनी हार नहीं मानते। श्यामलाल अपने अधूरे अरमानों को पूर्णत्त्व प्राप्त कराना चाहते हैं। और इसका एक मात्र सहारा "बीरन" है। परिवार की यह हालत देखकर श्यामलाल अंदर-ही-अंदर टूट पडते हैं।

बीरन यह सब देखता है और जलसेना में शामिल हो जाता है। बीरन बहुत ही समझदार लड़का है। अपने परिवार की हालत को वह भली-भाँति जानता है। लेकिन एक दिन बीरन समुद्र में खो जाता है। इस बात का उन्हें बहुत ही बडा दुख होता है। मानो श्यामलाल के परिवार पर आसमान ही टूट पडता है। श्यामलाल हर बात को स्वीकार करने के लिए तैयार होते हैं। समीरा को ट्रेनिंग के लिए भेजने की स्वीकृति देते हैं और स्वयं एक फैक्टरी में दरबान बनते हैं। उनके सारे अरमान टूट जाते हैं।

श्यामलाल की पत्नी एक साधारण स्त्री है। बीरन की मौत को उसका भीतरी दिल नहीं मानता। समीरा और तारा इनके दिल में माँ-बाप के प्रति प्यार है। यह दोनों फैशन करके माडर्न लडकियों की तरह रहना चाहती है। अपने भैया बीरन की मौत के बाद वह अपने घर को संभालना चाहती है। जिन्दगी के साथ मुकाबला करने के लिए समीरा तैयार हो जाती है।

नमता बीरन से प्यार करती है। लेकिन यह सब चुपचाप चलता है। बीरन की मौत की गहरी चोट नमता को होती है। बीरन की मौत के कारण वह व्याकुल हो जाती है।

इस उपन्यास पर छाया हुआ एक मात्र पात्र बीरन ही है। इस उपन्यास में नये और पुराने विचार घुल-मिल गये हैं। इसमें युवक-युवतियों की व्यथा है। मध्यवर्गीय परिवार किस तरह टूट जाता है, इसकी ददर्भरी और यथार्थ कहानी

इस उपन्यास में दिखाई देती है। बीरन सचमुच समुद्र में खो जाता है और कभी न हटनेवाला घोर अंधःकार अचानक फैल जाता है।

यह उपन्यास एक टूटे हुए मध्यवर्गीय परिवार की कहानी है। बीरन सचमुच ही समुद्र में खो जाता है। लेकिन एक विशाल जनसमुद्र में आर्थिक स्थिति के कारण श्यामलाल भी खो जाता है।

2·7 **काली आँधी :-**

राजनीतिक समस्या को सामने रखते हुए "काली आँधी" उपन्यास प्रस्तुत किया है। और इस राजनीतिक समस्या के कारण ही जग्गीबाबू और मालती ये दोनो पति-पत्नी में तनाव पैदा हो जाता है। कमलेश्वरजी ने देश में व्याप्त भ्रष्टाचार का पर्दाफाश "काली आँधी" उपन्यास के माध्यम से किया है। मालती बहुत ही महत्त्वाकांक्षी नारी है। वह हमेशा अपने स्वार्थ के लिए पूँजीवादी व्यवस्था को बनाए रखने की कोशिश करती है और इसी कारण वह जनसामान्य को भड़काती है। "काली आँधी" उपन्यास में मानवीय संवदेना को अत्यन्त सशक्त शब्दों में सूक्ष्मता के साथ रूपायित किया गया है। जग्गी बाबू राजनीति के घृणित और अपमानजनक वातावरण से त्रस्त है और इसी कारण वे हमेशा व्यथित और चिंतित दिखाई देते हैं। उनकी पीड़ा और यातनामयी मनःस्थिति स्वाभाविक प्रतीत होती है।

राजनीति के कारण आज के जीवन में भ्रष्टाचार ने किस तरह प्रवेश किया है इसका यथार्थ चित्रण इस उपन्यास में किया गया है। स्वाधीनता प्राप्त भारत की पच्चीस वर्ष के पश्चात् भी जो राजनीतिक अस्थिरता है, उसका यथार्थ वर्णन लेखक ने काली आँधी में किया है।

"काली आँधी" की नायिका है "मालती"। इसका प्रभावपूर्ण व्यक्तित्व पाठकों पर छा जाता है। मालती को राजनीति में सफलता मिलती है। वह पारिवारिक जीवन में हमेशा असफल हो गयी। उसे अपने बच्चों से अलग होना पड़ा। मालती के पति जग्गी बाबू से राजनीति में कोई लेन-देन नहीं है। वह स्वाभिमानी हैं।

"मालती के बदलते हुए जीवन को देखते हुए जग्गी बाबू को यह एहसास होता है कि राजनीति अत्यन्त घृणास्पद, स्वार्थयुक्त और झूठी होती है।"[5]

2.8 आगामी अतीत :-

"आगामी अतीत" उपन्यास कमलेश्वर का अत्यन्त लोकप्रिय उपन्यास है। इस उपन्यास में कमलेश्वरजी ने प्रेम-समस्या का चित्रण किया है। कमलबोस डाक्टरी की पढ़ाई करने के लिए दार्जिलिंग जाते हैं। दार्जिलिंग में जड़ी-बुटी बेचनेवाली चंदा नाम की युवती से उनकी पहचान होती है। उसी समय वे उसे वचन देते हैं कि डॉक्टरी पास करने के बाद शादी करेंगे। कमलबोस की बातों पर उसका विश्वास है। मगर वे एक बार चले जाने पर वापस नहीं आते। वे निरूपमा नाम की एक रईस लड़की के साथ विवाह कर लेते हैं। और कुछ ही दिनों में ही निरूपमा मर जाती है। पच्चीस साल बीत जाने के बाद कमलबोस को चंदा की याद आती है और वह चंदा की तलाश में निकल पडते हैं लेकिन चंदा कमलबोस का इंतजार करते-करते पागल होकर मर जाती है। इससे पहले चंदा के साथ विवाह करने के लिए कोई तैयार नहीं होता। फिर एक जंगली हरकारे से उसकी शादी करा दी जाती है। वह उससे बहुत बड़ा था। लेकिन कुछ ही दिनों बाद उसकी जंगली जानवरों द्वारा मौत हो जाती है। चंदा को चांदनी नामक एक लड़की पैदा हो जाती है।

कमलेश्वरजी ने कमलबोस के उदासी चित्रण इस उपन्यास में किया है। कमलबोस चंदा के साथ बेइमानी करके बड़ी भूल करते हैं। चंदा की याद उन्हें काफी चैन नहीं देती।

कमलबोस की तड़पन इस प्रकार है - "मैं सिलीगुडी में हूँ, मैं वादा करके भी इंस्टीटयूट के फंक्शन में नहीं आ सका। मैं चंदा की तलाश में निकल पड़ा था। नीलीघाटी गया, फिर धौलपुर और धौलपुर से सिलीगुडी। आज पता चला कि एक साल पहले चंदा स्वर्ग सिधार गयी। मैं एक वर्ष देर से पहुँचा। अब मन बहुत उदास है।"[6]

चंदा जब पागल खाने में थी तब चांदनी पर चार-पाँच पागल रेप करते हैं। चांदनी के सामने दूसरा कोई रास्ता नहीं था वह सीधे चंपाबाई के कोठे पर चली जाती है और वेश्या बन जाती है।

वास्तव में "आगामी अतीत" कमलेश्वर का बेहद चर्चित और अत्यन्त विवादास्पद उपन्यास है। इस उपन्यास में चांदनी का चरित्र पाठकों को विशेष प्रभावित करता है। यह लघु उपन्यास एक असफल प्रेमसंबंधों की कहानी है।

साथ ही साथ इसमें कस्बे की वेश्याओं की जिन्दगी को अत्यन्त सूक्ष्मता एवं स्वाभाविकता से कमलेश्वर ने अंकित किया है।

2·9 **निष्कर्ष** :-

आधुनिक हिन्दी साहित्य में कमलेश्वरजी का विशेष स्थान रहा है। एक उपन्यासकार के रूप में वे विशेष लोकप्रिय रहे हैं। "एक सड़क सतावन गलियाँ" से लेकर "आगामी अतीत" तक कमलेश्वरजी की एक लंबी औपन्यासिक यात्रा रही है।

"एक सड़क सतावन गलियाँ" में कमलेश्वरजीने जीवन के यथार्थ परिवेश का चित्रण किया है। इसमें मैनपुरी कस्बे की जिन्दगी का यथार्थ नज़र आता है। इसमें हिन्दुस्तान की आज़ादी से पहले की मानसिकता और आज़ादी के बाद की मानसिकता को रेखांकित करता है।

"डाक बंगला" में कमलेश्वरजी ने रूमानियत के भाव को प्रस्तुत करते हुए इरा की व्यथा को प्रस्तुत किया है। इरा सच्चा प्यार पाने के लिए हमेशा छटपटाती है।

"लौटे हुए मुसाफिर" में रोजी रोटी के लिए संघर्ष करनेवालों की कहानी को प्रस्तुत किया गया है। साथ-साथ साम्प्रदायिकता की समस्या को भी इसमें प्रस्तुत किया गया है। "नफरत की आग" का यथार्थ इस उपन्यास में देखने को मिलता

है। "लौटे हुए मुसाफिर" की मूल समस्या विभाजन की समस्या है।

"तीसरा आदमी" कमलेश्वरजी का चर्चित उपन्यास है। पति-पत्नी के बीच जब कोई तीसरा आता है तब बने हुए रिश्ते कैसे बिगड़ जाते है, उसका यथार्थ चित्र "तीसरा आदमी" में देखा जा सकता है। प्रेम-त्रिकोण की समस्या का मनोवैज्ञानिक धरातल का चित्रण हुआ है।

"काली आँधी" राजनीतिक भ्रष्टाचार का पर्दाफाश करनेवाला उपन्यास है। इसमें पति-पत्नी के असफल सम्बन्धों का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया गया है।

"समुद्र में खोया हुआ आदमी" कमलेश्वरजी का एक सामाजिक उपन्यास है। इसमें परिवार की टूटते जाने की प्रक्रिया का चित्रण देखने को मिलता है। इसी के साथ-साथ जीवन संघर्ष का रेखांकन देखा जा सकता है।

कमलेश्वरजी का "आगामी अतीत" एक बहुचर्चित और लोकप्रिय उपन्यास है। इस उपन्यास को लेकर काफी विवाद बढ़ गया था। इसमें कमलेश्वरजी ने रोमांटिकता को रोमांटिकता से ही तोडा है। "आगामी अतीत" में चांदनी का चरित्र हिन्दी साहित्य में बेजोड़ बन पड़ा है।

इस तरह कमलेश्वरजी के सारे उपन्यास जीवन के यथार्थ को यथार्थरूप में प्रस्तुत करनेवाले मिल के पत्थर साबित हुए हैं। प्रत्येक उपन्यास स्वाभाविक और सरस बन पड़ा है।

संदर्भ सूची

1. हिन्दी लघु उपन्यास / घनश्याम "मधुप" / पृ·163
2. लौटे हुए मुसाफिर / कमलेश्वर / पृ·20
3. लौटे हुए मुसाफिर / कमलेश्वर / पृ·21
4. कमलेश्वर / संपादक मधुकर सिंह / पृ·214
5. हिन्दी के बहुचर्चित उपन्यास और उपन्यासकार / डॉ·अमर जायसवाल/पृ·46
6. आगामी अतीत / कमलेश्वर / पृ·67